सुथरेशाह जी का प्राकट्य

कुल पवित्रं जननी कृतार्थां, वसुन्धरा भाग्यवती च तेन।
विमुक्ति मार्गे सुख सिन्धु मग्नं, लग्ने परे ब्रह्मणि यस्य चेत:।।

(स्कन्द पु॰ ५५/१४०)

जिसका चित् मोक्ष मार्ग में चलते हुए पारब्रह्म परमात्मा में लीन रहता है और जो अपार आनन्द सागर में निरन्तर निमग्न रहता है ऐसे महान महायोगी को जन्म देने वाला कुल पवित्र हो गया। उसकी माता कृतार्थ हो गई है तथा उसे प्राप्त करके यह सारी पृथ्वी सौभाग्यवती हो गई है।

शास्त्रों में लिखा है कि जब किसी दैवी सम्पदा युक्त बालक का जन्म होत है तो उसके जन्म से पूर्व प्रकृति भी उनकी शुभ सूचना देती है। आज प्रकृति में चारों ओर शोभा छाई हुई थी। पूर्ण चन्द्रमा अपने शुभ्र आलोक से यह संकेत कर रहा था कि ज्ञानालोक का उदय होने वाला है। उज्ज्वल चन्द्रिक मानों किसी महान पुरुष के निर्मल यश की पूर्व सूचना दे रही थी। स्वच्छ निर्मल आकाश अपने शरीर पर दिव्य नक्षत्रों को सजाए हुए किसी ऐसे महान पुरुष को दिखा रहा था जिसका अन्त:करण दैवी गुणों से भरपूर हो। रजनी गनी किसी महान पुरुष के शुभागमन में मोती लुटा रही थी।

सम्वत् १६७२ की श्रावण मास की पूर्णिमा की शुभरात्रि तद्नुसार १६१५ ई० में गाँव बहरामपुर जिला गुरदासपुर पंजाब में श्री बिहारी लाल नन्दा जी (क्षत्रिय) एवं माता यशदेवी के गर्भ से एक अद्भुत बालक ने जन्म लिया। जन्म के समय से ही इस बालक के मुख में पूरे दांत व चेहरे पर दाढ़ी थी। पण्डितों एवं ज्योतिषियों ने विचार कर इस अद्भुत एवं लोक कल्याणार्थ जन्मे बालक को पूरे गाँव व परिवार के लिए अशुभ बतलाया जिससे कि बालक के प्रति किसी को मोह उत्पन्न न हो। जिस बालक का जन्म लोक कल्याण के लिए हुआ हो उसे गाँव की चारदीवारी में कैसे बन्द रखा जा सकता है। नियति उसके लिए एक नया मंच तैयार कर चुकी थी। माता यशदेवी ने नवजात शिशु को देखा तो उसे लगा मानो उसके घर में साक्षात् भगवान ने जन्म लिया है। उसने बच्चे को अपनी छाती से लगा लिया। परन्तु विधि का लेखा कौन मिटा सकता है? ससुराल व गांव वालों के सामने एक असहाय नारी की कहाँ चल सकती थी। उसने अपनी छाती पर पत्थर रख लिया व ईश्वर से प्रार्थना करने लगी, हे गोपाल! मेरे इस बच्चे की रक्षा करना। जिस प्रकार तूने माता देवकी के गर्भ से जन्म लेकर माता यशोदा के घर बाल क्रीड़ा की । उसी प्रकार मेरे घर का यह चिराग किसी दूसरे घर को रोशनी प्रदान करेगा। उसे भी यशोदा जैसी माँ देना प्रभु । इसकी रक्षा करना। इस प्रकार माता यशदेवी ने आखिरी बार बालक को गले लगाया व अश्रुपूरित नेत्रों से बोली - 'तू तो जन्मजात संत है' तू अनंत जन्मों के पुण्य लेकर मेरी कोख को धन्य करने आया था । तुझे प्राप्त कर मैं धन्य हो गई । जाओ बेटा, मेरा आशीर्वाद है कि जिन रुढ़ियों एवं अन्धविश्वास के कारण तुझे मुझसे जुदा किया जा रहा है तू ऐसे अज्ञान व अन्धकार में भटके हुए लोगों को राह दिखलायेगा व अपने इस कुरूप चेहरे के पीछे छिपे हुए सौंदर्य की छटा को जन-जन में बिखेरेगा। मेरा आशीर्वाद है कि दुख, दावानल, दग्ध एवं तापत्रय संतप्त मानव समुदाय को तू शान्ति प्रदान करेगा । तेरी कुरूपता के पीछे तुम्हारे मन के सौन्दर्य को लोग युगों-युगों तक याद रखेंगे ।

यह कहते कहते माता यशदेवी मूर्छित हो गई । परिवार के लोग इस बालक को रावी नदी के किनारे झाड़ियों में छोड़ आए ।

अन्धविश्वास एवं रूढ़िग्रस्त गाँव के लोग नहीं जानते थे कि ये बालक जो श्रावण पूर्णिमा (रक्षा बन्धन) को इस धरा धाम पर अवतरित हुआ है एक दिन अपनी अलौकिकता के कारण सुथरा सम्प्रदाय की नींव रखेगा व भारत में प्रेम, एकता व भाईचारे का संदेश देगा। हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों का विरोध करेगा। कुरीतियों को दूर कर अज्ञान एवं अन्धकार में भटके हुए लोगों के रोशनी प्रदान करेगा ।

अतः संयोगवश उसी रास्ते से श्री गुरुनानक गद्दी के छठे संत मीरी पीरी के शहनशाह श्री हरगोबिन्द साहिब जी महाराज अपनी संत मण्डली सहित प्रभु नाम का उच्चारण करते हुए जा रहे थे। उन्हें बालक का रुदन सुनाई दिया। उन्होंने रुककर बच्चे को ढूंढ लाने के लिए अपने सेवक भाई भगतु को आदेश दिया जो कि उस समय श्री गुरु महाराज जी के पीछे-पीछे चल रहा था । गुरु आज्ञानुसार भाई भगतु बालक को उठा लाया जो कि उस समय धूल से सना हुआ था ।

जब बालक को गुरु महाराज के चरणों में पेश किया गया तो महाराज जी ने बालक को गोद में लेने के लिए आगे हाथ बढ़ा दिए। मण्डली के सेवकों ने श्री हरगोबिंद साहिब जी महाराज से कहा कि 'महाराज, देखिए यह बालक कितना कुथरा (कुरूप) है '। इस पर महाराज जी ने मुस्कुराते हुए कहा - अगर यह कुथरा है तो इसे इधर लाओ, हम इसे सुथरा बनाऐंगे

कुथरा-कुथरा क्यों कहैं ? कुथरा न कोई होए,
सब जग सुथरा तब लगे, मन सुथरा जब होय ।

गुरु महाराज ने बालक को दोनों हाथों से उठा लिया, सेवकों से कपड़ा लेकर उसके शरीर को साफ किया। एक छोटा सा झोला मंगवाकर उसके गले में डाल दिया तथा कहा - अब तो सुथरा हुआ कि नहीं? सन्तों, ईश्वर के सभी रूप सुन्दर होते हैं। जल के किनारे मिलने से गुरु महाराज जी ने बालक का नाम जलज्योतिशाह रख दिया । वे इसे अपने साथ ही ले आए और इसे पुत्रवत पालने लगे। इस तरह माता यशदेवी के घर का चिराग गुरु घर को रोशन करने लगा। कुछ दिनों उपरान्त गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ने मंडियाली गाँव में भाई दयाराम की विनती मानकर उनकी सुपुत्री महादेवी

(मरवाही) के साथ आनन्द कारज (विवाह) किया। इस तरह बालक को माँ का प्यार भी मिलने लगा।

कभी कभी गुरु महाराज देश की अज्ञानता एवं अंधविश्वास से ग्रस्त भारत की दुर्दशा देखकर रो पड़ते थे। वह समझ चुके थे कि हमारे देश में कितना अंधविश्वास है। नवजात शिशु के मुँह में दाँत देखकर शायद उसके माँ-बाप ने इसे अशुभ समझा। किसी ने कह दिया होगा कि यह बालक अभागा है। माँ-बाप ने बिना सोचे समझे इस मासूम को रावी नदी के किनारे फेंक दिया। पर 'जाको राखे साइयाँ मार सके न कोए।' कहावत के अनुसार इस बालक ने संसार में बहुत कुछ करना था इसलिए हमारी नज़र इस बालक पर पड़ी और इसकी जान बच गई।

इक हूक सी दिल में उठती है, इक दर्द सा दिल में होता है।
हम रात को उठके रोते हैं, जब चैन से आलम सोता है।।